शान्तिपर्व कथासार

महाभारत के अठारह पर्वों में शान्तिपर्व अत्यन्त बृहदाकार का है। इसमें राजधर्मानुशासन, आपद्धर्म तथा मोक्षधर्म नामक तीन उपपर्व और कुल ३६५ अध्याय तथा १४१७७ श्लोक हैं।

(१) राजधर्मानुशासनपर्व

इस उपपर्व में (१-१३०) १३० अध्याय तथा ४८५४ श्लोक हैं। कुरुक्षेत्र युद्ध में अपने भाई बन्धुओं को खोकर चिन्ताक्रान्त युधिष्ठिर से मिलने व्यास, नारद, देवल, कण्व आदि महर्षि वहाँ आये थे। व्याकुलचित्त राजा को उन्होंने आश्वासन दिया। सबसे पहले नारद ने युधिष्ठिर से उसकी व्यथा के बारे में पूछा। राजा युधिष्ठिर ने कहा कि हे महर्षि! हम ने सुना था कि गुप्तरूप से कुन्ती से उत्पन्न कर्ण हम लोगों के बडे भाई थे, अज्ञान से राज्य के लोभ में पडकर मैंने भाई के हाथ से भाई का वध करवा दिया। यह मेरे अङ्गों को जला रही है। हे नारद! संग्राम में कर्ण के रथचक्र भूमि में क्यों घुस गयी। कर्ण को कैसे शाप प्राप्त हुआ। आप मुझे बताइये। युधिष्ठिर के पूछने पर नारद ने कर्ण के शापवृत्तान्त को बताया। देवताओं ने भूमण्डल के सारा क्षत्रिय समुदाय अस्त्र शस्त्रों के आघात से पवित्र होकर स्वर्गलोक पहुँचने का उपाय सोचकर सूर्यद्वारा कुन्ती के गर्भ से एक तेजस्वी बालक को उत्पन्न कराया, जो संघर्ष का मूलकारण था। इसलिए वह बालक कर्ण पाण्डवों से जलते दुर्योधन के साथ मित्रता स्थापित कर ली। उसकी दुर्बुद्धि समझकर द्रोणाचार्य ने परशुराम के पास जाने को सलाह दिया। कर्ण अपने को भृगुवंशी ब्राह्मण कहकर परशुराम का आश्रय लिया। एक दिन कर्ण अनजान में मृग समझकर किसी ब्राह्मण की होमधेनु को मार डाला। कुपित ब्राह्मण उसे शाप दिया कि हे नराधम! जिसके साथ सदा ईर्ष्या करते हो उसके साथ संग्राम में युद्ध करते समय तेरे रथ के पहिये को पृथ्वी निगल जायेगी। उसी समय असावधान अवस्था में शत्रु तेरा सिर काट डालेगा।

गुरुसेवा से संतुष्ट परशुराम कर्ण को ब्रह्मास्त्र विद्या सिखाया। एक दिन थका हुआ परशुराम कर्ण की गोद में सिर रखकर सो गया। उसी समय अलर्क नाम से प्रसिद्ध एक मांसाहारी कीटक कर्ण की जाँघ के पास पहुँचकर उसे छेद किया। गुरु के जागने की शङ्का से उसने असह्य वेदना को सहन कर लिया। लेकिन रक्त के स्पर्श से वे जाग उठे। कर्ण को सूत जानकर झूठ बोलने से क्रुद्ध परशुराम ने उसे शाप दिया कि हे मूर्ख! तब तक ही ब्रह्मास्त्र का स्मरण रहेगा जब तक तू संग्राम में अपने समान योद्धा के साथ नहीं भिडेगा। कर्ण वहाँ से लौटकर दुर्योधन के पास पहुँचा और परशुराम से ब्रह्मास्त्र पाकर कर्ण उसके साथ आनन्दपूर्वक रहने लगा। कर्ण की सहायता से दुर्योधन ने कलिङ्गदेश के राजा चित्राङ्गद की कन्या को स्वयंवर सभा से अपहरण किया। महारथी कर्ण जरासंध को भी परास्त किया। हे राजन्! तुम्हारे भाई कर्ण को इस प्रकार शाप मिला। वह तो युद्ध में मारा गया। इसलिए शोक करने के योग्य नहीं है। अत्यन्त

खिन्न राजा युधिष्ठिर बोला कि हे माँ! आपने इस बात को गुप्त रखकर मुझे बडा कष्ट दिया। उसने सारे संसार की स्त्रियों को शाप दिया कि आज से स्त्रियाँ अपने मन में कोई गोपनीय बात नहीं छिपा सकेंगी। अत्यन्त व्याकुल वह राज्यभोग तथा जीवन से विरक्त हो गया। उसने अर्जुन से कहा कि हे अर्जुन! तुम इस पृथ्वी का पालन करो। मुझे राज्य और भोगों
से कोई इच्छा नहीं है। मैं सब कुछ छोडकर बन्धनमुक्त होकर वन जाऊँगा। युधिष्ठिर की बातें सुनकर अर्जुन उसके अभिप्राय का निराकरण करके राज्यधर्म पालन का उपदेश दिया और यज्ञानुष्ठान के लिए प्रेरित किया। लेकिन युधिष्ठिर वीतराग होकर वनवासी मुनियों के समान जीवन बिताने का निर्णय प्रकट किया। भीमसेन भी उसका विरोध करते अपने कर्तव्य का पालन करने का उपदेश दिया। फिर अर्जुन ने पक्षिरूपधारी इन्द्र तथा ऋषिबालकों के संवाद सुनाकर गृहस्थधर्म पालन करने का उपदेश दिया। नकुल गृहस्थधर्म की महत्ता को बताया। सहदेव ने उपदेश दिया कि हे भारत! दो अक्षरों का 'मम' मृत्यु है। तीन अक्षरों का 'न मम' शाश्वतिक ब्रह्मपदार्थ है। दोनों हमारे भीतर हैं। हे राजन्! पूर्ववर्ती श्रेष्ठ पुरुषों ने जिस मार्ग का सेवन किया है उसका आश्रय लेना चाहिए। द्रौपदी भी धर्मराज को धर्मपूर्वक प्रजा पालन करते हुए पृथ्वी पर शासन करने को प्रेरित किया। राजदण्ड की महत्ता बताते हुए अर्जुन ने कहा कि यदि ब्राह्मण अपराध करे तो वाणी से उसको अपमानित करना ही उसका दण्ड है। क्षत्रिय को (भुजार्पण) उससे काम लेना ही उसका दण्ड है। जुर्माना के रूप में धन वसूल करना वैश्यों का दण्ड है। परन्तु शूद्र दण्डरहित कहा गया है। जहाँ दण्ड सुचारु रूप से प्रयुक्त होता है वहाँ पाप और वञ्चना भी देखने में नहीं आती। इसलिए "हे राजन्! दण्ड की महिमा समझकर उसे उत्तमरूप से अपनाते प्रजा की रक्षा कीजिए। भीमसेन ने अज्ञातवास के समय अनुभूत दुःखों की याद दिलाकर राज्यशासन करने का उपदेश दिया और विधिपूर्वक दक्षिणा देते हुए अश्वमेध यज्ञ को अनुष्ठान करने की प्रेरणा दी। युधिष्ठिर ने भीम की बातों की विरोध करते हुये कहा कि हे भीम! असंतोष, प्रमाद, मद, राग, अशान्ति आदि पाप तुम्हारे भीतर घुस गये हैं। इसलिए तुम्हें राज्य की इच्छा होती है। बुद्धिमान और तपस्वी ही सच्चिदानन्दस्वरूप ब्रह्म को प्राप्त करते हैं। अन्य नहीं। इस प्रकार के वाग्बाणों से पीडित अर्जुन फिर युधिष्ठिर को विदेहराज जनक तथा उनकी रानी का संवाद सुनाकर उसे सन्यास ग्रहण करने से रोकने का प्रयत्न किया। युधिष्ठिर फिर अपनी मत का समर्थन किया। इसके बाद महातपस्वी देवस्थान ने धर्म से जीती पृथ्वी को त्याग देना अनुचित कहकर उसे यज्ञानुष्ठान के लिए प्रेरित किया। अत्यन्त खिन्न अर्जुन ने क्षत्रियधर्म की महत्ता को बताकार उसे समझाया। व्यासमहर्षि ने गृहस्थ आश्रम की प्रशंसा करके उसे पालन करने का उपदेश दिया। युधिष्ठिर के पूछने पर उसने तपस्वी भाई शङ्ख और लिखित की कथा सुनाकर दण्डधारण हीक्षत्रिय धर्म बताया। महर्षि ने कहा कि हे भारत! ययाति के समान इस पृथ्वी का पालन करो। तुम्हारे तपस्वी भाइयों ने वनवास के

समय बहुत दुःख उठाये हैं। अब ये दुख के बाद सुख का अनुभव करें। भाइयों के साथ धर्म, अर्थ, काम का उपभोग करके बाद में वन में चले जाना। पहले सर्वमेध और अश्वमेध यज्ञों का अनुष्ठान करो। कार्य की सिद्धि में काल ही सामान्य कारण है। हे राजन्! तुम मूढ बनकर शोक क्यों कर रहे हो? मरे हुये शोचनीय व्यक्तियों को क्यों बार बार स्मरण करते हो? शोक के सहस्रों स्थान हैं। हर्ष के सैकडों अवसर हैं। मूढ मनुष्य पर ही उनका प्रभाव होता है, विद्वान पर नहीं। इस प्रकार व्यास ने उसे समझाया। इस संदर्भ में युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा कि हे अर्जुन! तुम समझते हो कि धन से बढकर कोई वस्तु नहीं है। निर्धन को किसी प्रकार सुख नहीं मिलता। यह तो असत्य है। बहुत से लोग स्वाध्याय यज्ञ करके अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त करते हैं। युद्ध में भाई
बन्धुओं के मरने से शोकविह्वल युधिष्ठिर ने अपने शरीर को त्याग करने की आज्ञा माँगी। अश्मा ऋषि और जनक के संवाद सुनाकर महर्षि व्यास युधिष्ठिर को समझाया। भगवान श्रीकृष्ण शोक के समुद्र में डूबे युधिष्ठिर को समझाया। इस सन्दर्भ में उसने पुत्रशोक से पीडित राजा सृंजय को महर्षि नारद ने जो उपदेश दिया उसे सुनाया। युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से पूछा कि हे भगवन्! पर्वत मुनि ने पुत्रशोक से पीडित राजा सृंजय को काञ्चनष्ठीवी नामक पुत्र को क्यों दिया? वह क्यों मर गया? सुवर्णष्ठीवी नाम पडने का क्या कारण था? यह सब मैं जानना चाहता हूँ। श्रीकृष्ण ने उस उपाख्यान को सुनाया। महर्षि व्यास ने युधिष्ठिर को समझाते हुये कहा कि हे राजन्! तुमने धर्मद्रोहियों को मारकर धर्म की रक्षा किया। इसलिए चिन्ता मत करो। एक व्यक्ति को मार देने से कुटुम्ब के अन्य व्यक्तियों का कष्ट दूर हो जाय या एक कुटुम्ब के नाश करने से सारे देश को सुख शान्ति मिले तो वैसा करना दुष्ट व्यवहार नहीं है।

राजा युधिष्ठिर ने भगवान् श्रीकृष्ण, महर्षि व्यस आदि महापुरुषों के उपदेश सुनकर मानसिक दुःख का त्याग किया और कर्तव्य का निश्चय करके हस्तिनापुर में प्रवेश किया। पाण्डवों के नगर प्रवेश करते समय नगरवासियों ने उनका स्वागत किया। वैदिक ब्राह्मणों के बीच दुर्योधन के मित्र चार्वाक नामक राक्षस भिक्षु वेष में खडे होकर युधिष्ठिर की निन्दा की। उसे कपट वेष में स्थित राक्षस जानकर ब्राह्मण लोग उसका वध किया। युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ। उसने जिन जिन लोगों को जिन जिन कार्यों के योग्य समझा उनको उन कार्यों में नियुक्त किया। राजा युधिष्ठिर ने युद्ध में मारे गये अपने भाई बन्धुओं का श्राद्ध कर्म किया। राजा की आज्ञा पाकर सब लोग अपने अपने घर चले गये। अगले दिन राजा युधिष्ठिर श्रीकृष्ण के पास गये और ध्यानमग्न श्रीकृष्ण से पूछा कि हे पुरुषोत्तम! आप किसका ध्यान कर रहे हैं। यह तो बडे आश्चर्य की बात है। श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया कि हे राजन्! बाणशय्या पर पडे हुये भीष्म इस समय बुझती हुई आग के समान हो रहे हैं, मेरा ध्यान कर रहे हैं। इसलिए मेरा मन उन्हीं में लगा हुआ है। भरतश्रेष्ठ! वे भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों की बातें जानते हैं। जब वे अपने कर्मों के अनुसार स्वर्गलोक चले जायेंगे तब यह

पृथ्वी अमावास्या की रात्रि के समान कान्ति हीन हो जायगी। आप भीष्म के पास जाकर उनके चरणों को प्रणाम कीजिए और आपके मन में जो सन्देह हो उनसे पूछिए। युधिष्ठिर ने कहा कि हे भगवन्! आप को मुझ पर अनुग्रह हो तो हम लोग आप को ही आगे करके भीष्मजी के पास चलेंगे। उत्तरायण के होते ही भीष्म देवलोक चले जायेगे। अतः उन्हें आपका दर्शन अवश्य प्राप्त होना चाहिए। श्रीकृष्ण ने सात्यकि को रथ तैयार करने का आदेश दिया। व्यास, नारद आदि ऋषियों के बीच में स्थित भीष्म श्रीकृष्ण की स्तुति करने लगा इसे भीष्मस्तवराज कहते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण योगबल से भीष्मजी के निकट गये और उन्हें दिव्य ज्ञान देकर लौट आये। जब भीष्मजी का श्रीकृष्ण की स्तुति करना बंद हो गया तब वहाँ बैठे महर्षियों ने गद्‌गद कण्ठ से उनकी प्रशंसा की।

श्रीकृष्ण और पाण्डव कुरुक्षेत्र पहुँचें। उन्होंने देखा कि भीष्म बाणशय्या पर सो रहे हैं। श्रीकृष्ण को देखते ही भीष्म उनको प्रणाम किया। श्रीकृष्ण ने कहा कि हे भीष्म! जब भगवान् सूर्य दक्षिणायन से लौटते हुए उत्तरदिशा की ओर निकलेंगे तब आप उत्तम लोकों में जायेंगे।

ज्ञानी पुरुष वहाँ जाकर फिर इस संसार में नहीं लौटते। जब आप परलोक चले जायेंगे उस समय आपका पूरा ज्ञान लुप्त हो जायगा। इसलिए आप धर्म अर्थ युक्त वचन सुनाकर युधिष्ठिर के शोक दूर कीजिए। भीष्म ने शरीर की पीडा तथा इन्द्रियों के शैथिल्य से अपनी असमर्थता प्रकट की। भगवान् श्रीकृष्ण ने उनकी व्यथा दूर करने का वर दिया। सन्ध्या होने पर भीष्म से बिदा लेकर सब लोग स्वस्थान चले गये। अगले दिन सुबह श्रीकृष्ण युधिष्ठिर आदि के साथ वहाँ पहुँचे। युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने राजधर्मों का वर्णन किया। उसने कहा कि हे पुत्र युधिष्ठिर! पुरुषार्थ के बिना केवल प्रारब्ध से राजाओं का प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। इसलिए तुझे पुरुषार्थ के संपादन में सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए। सत्य ही विश्वास का मूल कारण है। राजा को सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए। हे युधिष्ठिर! मैं ने तुम से जो कुछ कहा है वह राजधर्मरूपी दूध का माखन है। सन्ध्या होने पर भीष्म से बिदा लेकर सबलोग हस्तिनापुर चले गये। तदनन्तर दूसरे दिन सबेरे उठकर प्रातः कालिक क्रिया की समाप्ति करके फिर भीष्म के पास पहुँचे। युधिष्ठिर ने भीष्म से राजा शब्द की उत्पत्ति और उसके व्यवहार के बारे में पूछा। भीष्म ने कहा कि हे भारत! सत्ययुग के आरम्भ में न कोई राज्य था, न राजा, न दण्ड था, न दण्ड देनेवाला। समस्त प्रजा धर्म के द्वारा ही एक दूसरे की रक्षा करती थी। कुछ दिनों के बाद सब लोग परस्पर संरक्षण के कार्य में कष्ट का अनुभव करने लगे और उन सब पर मोह छा गया। कर्तव्याकर्तव्य विवेकशून्य हो जाने से धर्म का नाश हो गया और सब लोग लोभ के अधीन हो गये। अप्राप्त वस्तु को पाने के प्रयत्न में उन्हें काम नामक दोष घेर लिया। तथा वे राग के वशीभूत हुए।

इस प्रकार मनुष्य लोक में धर्म का तथा वैदिक कर्मों का नाश होने लगा। तब देवताओं ने यज्ञ कर्मों के लोप हो जाने से भयभीत होकर ब्रह्माजी के शरण

में गये। देवताओं के कल्याण को सोचकर ब्रह्मा ने अपनी बुद्धि से एक लाख अध्यायों का नीतिशास्त्र रचा। उसमें धर्म, अर्थ और काम का विस्तारपूर्वक वर्णन है। वह प्रकरण त्रिवर्ग नाम से विख्यात है। चौथा वर्ग मोक्ष है। इस प्रकार भीष्म ने नीतिशास्त्रविषय तथा राजाओं के महत्त्व को बताया। युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने वर्णधर्म, आश्रमधर्म तथा राजा के प्रधान कर्तव्य का उपदेश दिया। उसने कहा कि जिस समय राजा दण्डनीति का ठीक प्रयोग करता है उस समय पृथ्वी पर पूर्णरूप से सत्ययुग का आरम्भ हो जाता है। राजा ही कृतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलियुग की सृष्टि का कारण है। धार्मिक पालन ही राजा का कर्तव्य है। राज्य से विरक्त युधिष्ठिर को राज्य की माहिमा सुनायी। इस संदर्भ में भीष्म ने अनेक उपाख्यानों को बताया।

(२) आपद्धर्मपर्व

इस उपपर्व में (१३१-१७३) ४३ अध्याय तथा १६५२ श्लोक हैं। युधिष्ठिर ने भीष्म से पूछा कि हे भारत! सेना और धनसम्पत्ति क्षीण होना आदि कारणों से विपत्तिग्रस्त राजा पर यदि शत्रु आक्रमण करें तो क्या करना है? भीष्म ने कहा कि हे राजन्! जो शत्रु धर्म और अर्थ कुशल हो या अधर्म परायण हो उसके साथ जल्दी ही सन्धि करना ही अच्छा है। राजधर्म का वर्णन करते हुए भीष्म ने कहा कि हे राजन्! किसी के वचन के आधार पर ही राजा किसी को न तो दण्ड दे और न किसी का सत्कार करे। किसी का निन्दा नहीं करना चाहिए और न उसे सुनना चाहिए। श्रेष्ठपुरुषों के मार्ग को अपनाना ही उत्तम धर्म है। राजा के लिए कोशसंग्रह की आवश्यकता है। कोश से ही धर्म तथा राज्य की वृद्धि होती है। धर्म या अधर्म का फल किसी ने कभी यहाँ प्रत्यक्ष नहीं देखा। इसलिए राजा बलप्राप्ति के लिए प्रयत्न करे। धर्म से बल ही श्रेष्ठ है। क्यों कि धर्म बल पर ही प्रतिष्ठित है। राजा को यज्ञशील पुरुषों का धन नहीं लेना चाहिए। लुटेरों तथा कर्मरहित मनुष्यों का धन ले सकता है। आनेवाले संकट को पहले ही समझकर उपाय को सोचता है वह प्रत्युत्पन्नमति कहलाता है। इस सन्दर्भ में दूरदर्शी, तत्कालज्ञ और दीर्घसूत्री नामक तीन मत्स्यों का वृत्तान्त सुनाया। बुद्धिमान स्वार्थसिद्धि का अवसर देखकर शत्रुओं से संधि कर लेता है और मित्र के साथ विरोध। इससे महान फल प्राप्त कर लेता है। बिडाल और चूहे का उपाख्यान से इसका समर्थन किया। शत्रु से सदा सावधान रहने के विषय में राजा ब्रह्मदत्त और पूजनी नामक चिडिया का संवाद बताया। युधिष्ठिर ने फिर उसे पूछा कि हे पितामह! अब लोक में धर्म का क्षय दिखाई पडती है। डाकू और लुटेरे धर्म में बाधा पहुँचाते हैं। इस समय में किस तरह रहना चाहिए। भीष्म ने आपत्कालीन नीति को बताते हुए भारद्वाज कणिक तथा राजा शत्रुञ्जय के संवादरूप एक प्राचीन इतिहास सुनाया। विश्वामित्र और चाण्डल की कथा सुनाकर संकटकाल में ब्राह्मण को जीवन निर्वाह करने का उपाय बताया। धर्म का उपदेश करते हुए उसने आपत्तिकाल में भी सदा दुष्टों का दमन और शिष्ट पुरुषों की रक्षा करने

का उपदेश दिया। युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने शरणागत की रक्षा करने से जो धर्म प्राप्त होता है उसे बताया। इस संदर्भ में उसने शरणागत शत्रु को कबूतर ने किस प्रकार सत्कार किया, सुनाया। पहले परशुराम ने राजा मुचुकुन्द को यह कथा सुनायी थी। एक समय किसी एक व्याध महारण्य में घूमता था। पक्षियों को मारकर बाजार में बेचना उसका व्यापार था। अरण्य में घूमते समय भारी वर्षा हुई। जल के प्रवाह से वन का मार्ग डूब गया। शैत्य से पीडित वह अचेत सा हो गया और व्याकुल हृदय से इधर उधर भटकने लगा। उस समय उसने शैत्य से व्याकुल भूमि पर गिरी हुई कबूतरी को देखा। निर्दयी व्याध उसे उठाकर पिंजडे में डाल दिया। स्वयं दुःख से पीडित होने पर भी उसने फिर पाप ही किया। इसके बाद उसने एक वृक्ष का आश्रय लेकर रात को उसके नीचे सोया। उस वृक्ष के ऊपर एक कबूतर अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसकी पत्नी सबेरे ही आहार के लिए बाहर गयी फिर लौट नहीं आयी। उसके लिए दुःखी पति कबूतर इस प्रकार विलाप करने लगा-- वास्तव में घर को घर नहीं कहते। घरवाली ही घर है। उसके बिना घर अरण्य के समान माना गया है। मेरी पत्नी उत्तम व्रत का पालन करनेवाली पतिव्रता थी। मुझे भोजन कराये बिना भोजन नहीं करती। मेरे सो जाने पर ही शयन करती। मेरे प्रसन्न रहने पर वह संतुष्ट होती। वह सदा पति के हित में तत्पर रहती थी। संसार में स्त्री के समान कोई बन्धु नहीं है। स्त्री के समान कोई आश्रय नहीं है। स्त्री के समान धर्मसंग्रह में सहायक दूसरा कोई नहीं है। कबूतर के विलाप को सुनकर व्याध के पिंजडे में बन्दी पत्नी कूबूतरी ने कहा कि मेरा अत्यन्त सौभाग्य है कि मेरा प्रियतम पतिदेव मेरे गुणों की प्रशंसा कर रहा है। पति के संतुष्ट रहने पर स्त्रियों पर संपूर्ण देवता संतुष्ट रहते हैं। ऐसा सोचकर कबूतरी ने दुःखित पति से कहा कि हे प्राणनाथ! आप अब पुत्रवान् हो चुके हैं। अतः आप अपनी देह पर दया न करके दुःखी व्याध का उपकार करें। आप मेरे लिए संताप न करें। शरीरयात्रा निर्वाह करने के लिए आपको दूसरी स्त्री मिल जायेगी। पत्नी की धार्मिक बात सुनकर कबूतर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और व्याध का सत्कार करके कहा कि मैं आपकी क्या सेवा करूँ। यदि शत्रु भी घर पर आ जाय तो उसका उचित आदर सत्कार करना चाहिए। जो काटने के लिए आया हो, उसके ऊपर से भी वृक्ष अपनी छाया नहीं हटाता। अतिथि सत्कार करना गृहस्थ का धर्म है। उसके शैत्य बाधा की निवृत्ति के लिए लुहार के घर जाकर आग ले आया और सूखे पत्तों पर रखकर अग्नि प्रज्वलित कर दी। व्याध ने कहा कि अब मुझे भूख सता रही है। भोजन करना चाहता हूँ। लेकिन कबूतर के पास कुछ भी नहीं था। उसने सूखे पत्तों से पुनः आग प्रज्वालित करके उसमें प्रवेश किया। यह देख व्याध मन ही मन चिन्तित हुआ और अपने कर्मों की निन्दा करते हुए बहुत विलाप किया। धर्माचरण का निश्चय करके कठोर व्रत का आश्रय लेकर महाप्रस्थान के मार्ग पर चला। कबूतरी को पिंजरे से मुक्त कर दिया। कबूतरी भी उस प्रज्वलित अग्नि में प्रवेश किया। दोनों पक्षी सत्कर्म से स्वर्गलोक चले गये। हे युधिष्ठिर! शरणागत का पालन उत्तम धर्म

है।

युधिष्ठिर ने पूछा कि हे भरतश्रेष्ठ! अनजान में किसी तरह पाप कर्म करते है तो उससे किस प्रकार मुक्त हो सकते है। इसके उत्तर में भीष्म ने इन्द्रोत मुनि और जनमेजय का वृत्तान्त सुनाया। युधिष्ठिर ने पूछा कि हे पितामह! क्या आपने कभी यह देखा या सुना है कि कोई मनुष्य मरकर पुनः उज्जीवित हो। इसके उत्तर में भीष्म ने ब्राह्मण बालक के जीवित होने की कथा बतायी। किसी ब्राह्मण का बालक बालग्रह से पीडित होकर बाल्यावस्था में चल बसा। मृतशरीर को लेकर बन्धु लोग श्मशान पहुँचकर रोने लगे। भूख से पीडित एक गीध उन्हें लौट जाने के लिए युक्ति युक्त बातें कहती है। भूखा (गीदड) सियार लौटते बन्धुओं को रोकने का प्रयत्न करता था। दोनों भूखे थें। इष्ट सिद्धि के लिए दोनों मृतक बन्धुओं से बातें करते थे। गीध कहता था कि सूर्यास्तमय हो गया। सियार कहता था नहीं। दोनों अपनी इष्ट सिद्धि के लिए शास्त्र का आधार लेकर बात करते थें। दोनों के वाद विवाद से मृतक बन्धु वहीं खडे थें। भगवान शिव के अनुग्रह से वह बालक जीवित हो गया। परमेश्वर ने गीध और गीदड को उनकी भूख मिट जाने का वर दिया।

युधिष्ठिर ने पूछा कि यदि कोई प्रबल व्यक्ति दुर्बल पर आक्रमण करे तो उसके साथ दुर्बल को कैसे व्यवहार करना है? इसके उत्तर में भीष्म ने शाल्मली वृक्ष (सेमल) तथा वायु का संवाद सुनाया और कहा कि दुर्बल मनुष्य को बलवानों के साथ कभी वैर न करना है। इस संसार में पुरुष में बुद्धि के समान दूसरी कोई वस्तु नहीं है। हे राजन्! बालक, जड, अन्ध, बधिर, तथा बलशाली पुरुष के द्वारा किये गये प्रतिकूल व्यवहार को भी क्षमाकर देना चाहिए। अठारह अक्षौहिणी सेनाएँ भी बल में अर्जुन के समान नहीं हैं। हे नरेश! मैं ने राजधर्म और आपद्धर्म विस्तार पूर्वक कह दिया। अब क्या सुनना चाहते हो? युधिष्ठिर ने पूछा कि हे भरत श्रेष्ठ! पाप का अधिष्ठान क्या है? किस से उसकी प्रवृत्ति होती है? भीष्म ने लोभ को पाप का अधिष्ठान बताकर उससे होनेवाले सब अनर्थों का वर्णन किया। अज्ञान का वर्णन करते हुये उसने कहा कि राग, द्वेष, मोह,हर्ष, शोक, अभिमान, काम, क्रोध, दर्प, तन्द्रा, आलस्य, इच्छा,
ताप, दूसरों की उन्नति पर जलना, पापाचार इन सब को अज्ञान बताया गया है। परिणाम का फल एक होने के कारण अज्ञान और अतिलोभ एक ही है। लोभ का त्याग करने से ऐहिक तथा पारलौकिक आनन्द मिलता है। इन्द्रियनिग्रह ही लोभ को दूर करने का उपाय है। भीष्म ने तप और सत्य की महत्ता बताया। क्रोध, काम, शोक, मोह, विधित्सा (अनुचित कर्म करने की इच्छा), परासुता (दूसरों को मारने की इच्छा) मद, लोभ, मात्सर्य, ईर्ष्या, निन्दा, असूया, तथा कृपा (दैन्यभाव) नामक तेरह दोषों का उत्पत्ति तथा उनके विनाश का उपाय बताया। नीचपुरुषलक्षण, नाना प्रकार के पाप और उनके प्रायश्चित्त का वर्णन किया।

युधिष्ठिर के पूछने के बाद नकुल खड्ग की उत्पत्ति आदि के बारे में प्रश्न किया। भीष्म ने खड्ग की उत्पत्ति का प्रसङ्ग विस्तार पूर्वक सुनाया। यह

कहकर जब भीष्म चुप रह गया तब युधिष्ठिर घर जाकर अपने भाई तथा विदुर से धर्म, अर्थ और काम पर चर्चा किया। फिर युधिष्ठिर भीष्म के पास आकर उनसे धर्म के विषय में प्रश्न किया। भीष्म ने पापी, मित्रद्रोही और कृतघ्न गौतम की कथा सुनायी।

(३) मोक्षधर्मपर्व

इस उपपर्व में (१७-४-३६५) १९२ अध्याय तथा ७६७१ श्लोक हैं। युधिष्ठिर ने पूछा कि हे पितामह! धन के नष्ट हो जाने पर या पत्नी, पुत्र अथवा पिता के मर जाने पर किस बुद्धि से मनुष्य अपने शोक का निवारण करें। इसके उत्तर में भीष्म ने राजा सेनजित् और ब्राह्मण के संवाद का वर्णन किया। पिता पुत्र संवाद के द्वारा सत्य, धर्म का अनुष्ठान, कल्याण का कारण बताया। शम्पाक नामक ब्राह्मण के उपदेश सुनाकर त्याग की महिमा बतायी। मङ्कि नामक मुनि की कथा सुनाकर समस्त कामनाओं का परित्याग, ब्रह्मप्राप्ति का उपाय बताया। भीष्म ने कहा कि संसार में बुद्धि से बढकर दूसरी वस्तु नहीं है। किसी एक समय धन से गर्वांध एक वैश्य ने तपस्वी ऋषिकुमार काश्यप को अपने रथ से धक्के देकर गिरा दिया। पीडित वह मुनि आत्महत्या के लिए उद्युक्त हुआ और बोला कि इस संसार में निर्धन मनुष्य का जीवन व्यर्थ है। मरने की इच्छावाले ऋषिकुमार को देखकर इन्द्र ने सियार का रूप धारण करके उपदेश दिया कि दुर्लभ उत्तम जन्म पाकर उसमें दोषदृष्टि करके स्वयं मरने के लिए उद्यत होना उचित नहीं है। काश्यप मुनि ज्ञानदृष्टि से उसे इन्द्र समझकर उसका पूजन किया और उनकी आज्ञा लेकर अपने घर लौट गये। युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने दान, यज्ञ, गुरुशुश्रूषा आदि पुण्यकर्मों का तथा पापकर्मों का फल बताया। भरद्वाज और भृगु संवाद के द्वारा स्थावर जंगम जगत् की उत्पत्ति, तथा पञ्च महाभूतों के गुणों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। भरद्वाज मुनि के संशय की निवृत्ति करते हुए भृगु ने कहा कि पहले भगवान् विष्णु ने महत्तत्व की रचना की। महत्तत्वस्वरूपसे भगवान् ने अहङ्कार की सृष्टि की। अहंकार स्वरूप भगवान ने आकाश को उत्पन्न किया। आकाश से जल, जल से अग्नि एवं वायु की उत्पत्ति हुई। अग्नि और वायु के संयोग से इस पृथ्वी का प्रादुर्भाव हुआ। इसके बाद भगवान् विष्णु ने एक दिव्य कमल उत्पन्न किया। उसी कमल से वेदमय निधिरूप ब्रह्मा प्रकट हुए। वे अहंकार नाम से भी विख्यात हैं। समस्त भूतों के आत्मा तथा उन भूतों की सृष्टि करने वाले हैं। इस तरह भृगु ने विस्तार से
सृष्टि का उत्पत्तिक्रम तथा आश्रमधर्मों का भरद्वाज को सुनाया। भीष्म ने यह सब कुछ युधिष्ठिर को बताकर फिर उससे पूछा कि हे नरेश! और तुम क्या सुनना चाहते हो? यधिष्ठिर ने आचारविधि के बारे में पूछा। भीष्म ने कहा कि सदाचारसम्पन्न ही श्रेष्ठ पुरुष है। सूर्योदय के समय कभी न सोये। हर दिन सूर्य की उपसना करना है। हाथ, पैर, मुँह धोकर पूर्वाभिमुख होकर भोजन करना है। भोजन के समय मौन रहे। अन्न स्वादिष्ट हो या न हो प्रीति से भोजन करे।

उसकी निन्दा कभी न करे। मनुष्य के लिए सायंकाल और प्रातः काल ही भोजन करना विहित है। बीच में भोजन करने का विधान नहीं है। जो इस नियम का पालन करता है उसे उपवास करने का फल मिलता है। भीष्म ने कहा कि धर्म ही मनुष्यों की योनि है। वही स्वर्ग में देवताओं का अमृत है। धार्मिक पुरुष मरने के बाद धर्म के ही बल से सुख का अनुभव करता है। उसने अध्यात्मज्ञान तथा ध्यानयोग का वर्णन किया। जप और ध्यान की महिमा कहकर उसका फल बताया। प्रजापति मनु तथा महर्षि बृहस्पति का संवाद के द्वारा आत्मतत्त्व का विवेक तथा परब्रह्म प्राप्ति का उपाय बताया। श्रीकृष्ण की महत्ता को बताते हुए कहा कि पुरुषोत्तम ने पृथिव्यादि पाँच महाभूतों की रचना की। पृथ्वी की सृष्टि करके जल में ही अपना निवास स्थान बनाया। उसने मन से ही संपूर्ण प्राणियों के आश्रय संकर्षण को उत्पन्न किया। संकर्षण ही समस्त भूतों का धारण करते हैं तथा वे ही भूत और भविष्य के आधार हैं। उसके पश्चात् श्रीकृष्ण के नाभि कमल से दिव्य कमल प्रकट हुआ। उससे ब्रह्म उत्पन्न हुए। तदनन्तर श्रीकृष्ण ने पृथ्वी की सृष्टि की। फिर चार वर्णों को पैदा करके धाता को उनका अध्यक्ष बनाया। बाद भूतों की सृष्टि की। पहले मनुष्य जितने दिनों तक शरीर धारण करने की इच्छा होती उतने दिनों तक वे जीवित रहते थे। यमराज का भय उन्हें नहीं था। संयोग के बिना संकल्पमात्र से ही संतान पैदा होती थी। त्रेतायुग में स्पर्श मात्र से संतान की उत्पत्ति होने लगी। द्वापरयुग में मैथुन धर्म का अंकुरार्पण हुआ। त्रेता और द्वापर के सन्धिकाल में राजा लोग युद्ध में आसक्त हुए। हे भरतश्रेष्ठ! केशव को मनुष्य नहीं मानना चाहिए। वे अचिन्त्य परमेश्वर हैं।

युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने प्रजापति और महर्षियों का वर्णन किया। गुरुशिष्य संवाद रूप इतिहास के द्वारा अध्यात्म तत्त्व बताया। जीवात्मा की स्थिति का वर्णन करके मोक्ष प्राप्ति करने का साधन बताया। शरीर से भिन्न आत्मा की सत्ता का प्रतिपादन किया। युधिष्ठिर ने पूछा कि हे भरतश्रेष्ठ! गृहस्थ आश्रम में रहकर संसार बन्धनों से दूर रहनेवाला कोई महापुरुष हो तो उसका परिचय दीजिए। इस सन्दर्भ में भीष्म ने ब्रह्मर्षि देवल की पुत्री तथा उसके पति श्वेतकेतु का अध्यात्मविषयक संवाद सुनाया। श्रीकृष्ण और उग्रसेन के संवाद के द्वारा नारदमहर्षि के गुणगणों का वर्णन किया। भगवान व्यास ने अपने पुत्र शुकदेव के पूछने पर सृष्टि, प्रलय तथा काल के स्वरूप का उपदेश दिया। भीष्म ने उस प्राचीन इतिहास सुनाया। पंद्रह निमेष की एक काष्ठा और तीस काष्ठा एक कला होती है। तीस कला का एक मुहूर्त होता है। इसके साथ कला का दसवां भाग और सम्मिलित होता है। अर्थात तीस कला और तीन काष्ठा का एक मुहूर्त होता है। तीस मुहूर्त का एक दिन रात होता है। तीस रात दिन का एक मास और बारह मासों का एक संवत्सर बताया गया है। मनुष्य लोक के दिन रात का विभाग सूर्यभगवान करते हैं। रात सोने के लिए और दिन काम करने के लिए है। मनुष्यों के एक मास पितृदेवताओं का
एक दिन रात होता है। शुक्लपक्ष काम के लिए दिन है और कृष्ण पक्ष विश्राम के

लिए रात है। मनुष्यों का एक वर्ष देवताओं के एक दिन रात के बराबर है। उत्तरायण उनका दिन और दक्षिणायन रात्रि। देवताओं के चार हजार वर्षों का एक सत्ययुग होता है। इसमें चार सौ दिव्य वर्षों की संध्या और चार सौ दिव्यवर्षों का संध्यांश भी होता है। कुल मिलाकर कृतयुग (सत्ययुग) ४८०० दिव्यवर्षों का है। त्रेतायुग ३६०० वर्षों का, द्वापरयुग २४०० वर्षों का तथा कलियुग १२०० वर्षों का होता है। इस प्रकार १२००० दिव्य वर्षों का एक चतुर्युग होता है। एक सहस्र चतुर्युग को ब्रह्मा का एक दिन और उतनी ही उनकी रात्रि होती है। ब्रह्मा दिन के आरम्भ में संसार की सृष्टि करते हैं। रात तो प्रलय का समय है। तब सबको अपने में लीन करके योगनिद्रा में रहते हैं। फिर रात बीतने पर जाग उठते हैं। फिर सृष्टि का आरंभ होता है। इस प्रकार भीष्म ने व्यासप्रोक्त अनेक विशेषों को सुनाया।

युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने धर्म और अधर्म के स्वरूप का वर्णन किया। इस सन्दर्भ में उसने महर्षि जाजलि और तुलाधार नामक वैश्य के धर्मविषयक संवाद को सुनाया। प्राचीन इतिहासों के द्वारा अहिंसा धर्म की महत्ता बताया। धन तृष्णा को दूर करने के संदर्भ में माण्डव्य मुनि और विदेहराज जनक का संवाद सुनाया। इन्द्र और वृत्रासुर के युद्ध का वर्णन करके ज्वर की उत्पत्ति का प्रसङ्ग सुनाया। महाशिव के द्वारा दक्षयज्ञ का भङ्ग, दक्ष द्वारा किया गया शिवसहस्रनामस्त्रोत्र का प्रस्ताव किया। युधिष्ठिर ने पूछा कि हे पितामह इह लोक और परलोक में भी कल्याण करनेवाला शुभकर्म क्या हैं? इसके उत्तर में भीष्म ने राजा जनक और पराशर मुनि का संवाद सुनाते हुये कहा कि धर्म का विधिपूर्वक अनुष्ठान से इस लोक तथा परलोक में कल्याण होता है। हंसरूपधारी ब्रह्मा तथा साध्यगणों का संवाद के द्वारा भीष्म ने जिस कार्य के करने से जीव को बन्धनों से शीघ्र छुटकारा मिलता है उसका उपदेश दिया। युधिष्ठिर के पूछने पर सांख्य और योग का अन्तर तथा दोनों का स्वरूप और महत्त्व बताया। व्यासपुत्र शुकदेव को वैराग्य प्राप्ति किस प्रकार हुई उसे बताया। दान, यज्ञ, तप और गुरुशुश्रूषा करने से जो फल मिलता है उसे सुनाया। शुकदेव का जन्मवृत्तान्त तथा उसके वेदाध्ययन आदि विशेषों का वर्णन किया। उपाख्यानों के द्वारा नर और नारायण ऋषियों के माहात्म्य बताया। भगवान विष्णु के हयग्रीवावतार का वर्णन किया। जनमेजय और वैशम्पायन के संवाद के द्वारा व्यासमहर्षि का वृत्तान्त सुनाया। वैशम्पायन ने जनमेजय से कहा कि हे राजन्! देवी सत्यवती ने यमुनातटवर्ती द्वीप में पराशर मुनि से व्यास महर्षि को पुत्र रूप में पाया। ये तो भगवान् नारायण के अंश हैं। उन्होंने व्यास को अपने पुत्ररूप से उत्पन्न किया। यह सुनकर जनमेजय ने पूछा कि हे मुने! आपने पहले पर्व में कहा था कि वसिष्ठ के पुत्र शक्ति, शक्ति के पुत्र पराशर और पराशर के पुत्र व्यास बताया। लेकिन अब आप इन्हें नारायण का पुत्र बताते हैं। इसका परमार्थ क्या है? वैश्मपायन ने कहा कि हे राजन्! ज्ञाननिधि व्यास वेदार्थ को जानने की इच्छा से पहले हिमालय पर रहते थे। तपोनिधि उन्होंने महाभारत नामक इतिहास की रचना की। सुमन्तु, जैमिनि, पैल,

वैशम्पायन और शुकदेव पाँच शिष्य उनकी सेवा करते थे। साङ्ग वेद तथा महाभारत के अर्थ शिष्यों को पढाते थे। एक दिन शिष्यों के पूछने पर उन्होंने भगवान नारायण से हुआ अपने जन्म का वृत्तान्त बताया। भगवान नारायण ने सातवें कल्प के आरंभ में सातवीं बार अपने नाभिकमल
से ब्रह्मा की उत्पत्ति करके उससे नाना प्रकार के प्रजाओं की सृष्टि करने का आदेश दी। उसके बाद भगवान ने राक्षसों से पृथ्वी का भार उतारने के लिए अनेक अवतारों का धारण करने का निश्चय करके अपने अनेक रूपों की सृष्टि की। तदनन्तर श्रीहरि ने 'भो' शब्द से सरस्वती का उच्चारण किया। इससे वहाँ अपान्तरतमा नामक सरस्वती का पुत्र आविर्भाव हुआ। भगवान ने उससे वेदों का पृथक् पृथक् संग्रह करने को कहा। भगवान की आज्ञा के अनुसार उसने वेदों का विभाग किया। संतुष्ट श्रीहरि ने उससे कहा कि हे पुत्र! सभी मन्वंतरों में तुम इसी प्रकार धर्म के प्रवर्तक रहोगे। कलियुग आजाने पर तुम्हारे शरीर का वर्ण काला होगा। तुम राग से सर्वथा मुक्त नहीं रहोगे। तुम्हारा पुत्र महेश्वर की कृपा से वीतराग होकर परमात्मस्वरूप हो जायेगा। पराशरमुनि उस समय तुम्हारे पिता होंगे। उन्हीं ऋषि से तुम पिता के घर में रहनेवाली एक कन्या के पुत्र रूप से जन्म लोगे और कानीन कहलाओगे। सरस्वतीपुत्र अपान्तरतम मुनि से भगवान ऐसा कहकर अपने काम में नियुक्त होने का आदेश दिया। व्यास ने कहा कि इस प्रकार मैं भगवान की कृपा से पहले मैं अपान्तरतमा नाम से उत्पन्न हुआ और उनकी आज्ञा से पुनः वसिष्ठकुलनन्दन (व्यास) के रूप में उत्पन्न होकर विख्यात हुआ हूँ। युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने उपाख्यान के द्वारा आश्रम धर्मों का पालन करनेवाले मनुष्यों के लिए सबसे उत्तम धर्म का उपदेश दिया।

।। शान्तिपर्व कथासार समाप्त ।।